हरियाणवी लोकवाद्य

डॉ. भारती
सहायक प्रोफैसर , संगीत वादन
राजकीय महिला महाविद्यालय करनाल

हरियाणा में संगीत की परम्परा वैदिक काल से चली आ रही है। हरियाणा के लोक संगीत को मुख्य दो श्रेणियां में बांटा जाता है (क) शास्त्रीय रूप (ख) देश का संगीत। शास्त्रीय रूप मूल रूप से पौराणिक कथाओं के गीतों पर जैसे आलाह, जयमल–फत्त, बरहमास, तीज, गीत, फाग और होली गीत, देष पक्ष के संगीत में पौराणिक कथाओं जैसे पुराण–भागता में राग मांड, औपचारिक गीत, मौसमी गीत, गाथागीत आदि षामिल है। लोक संगीत का प्राण लय को माना जाता है। इसी लय के आधार पर ही लोकगीतों का निर्माण हुआ। हरियाणा के संगीत में ताल और लय वाद्यों की संख्या अधिक है इसलिए हरियाणा की भूमि वीरों की भूमि कहलाती है। वाद्य विभिन्न प्रकार के रसों को उत्पन्न करते है जैसे वीर, रौद्र, करूण, श्रृंगार, इत्यादि। लोक संगीत में शास्त्रीय रागों की प्रधानता न होकर ताल और लय की प्रधानता ही अधिक होती है। हरियाणा में विभिन्न वाद्यों का प्रयोग विभिन्न अवसरों पर होता है जिसका वर्णन निम्नलिखित प्रकार से है। ढोलक – ढोलक वाद्य का प्रचलन काफी पुराना है इसका प्रयोग लोक गीतों एवं विभिन्न नृत्यों जैसे धमाल, फाग, होली के साथ होता है तथा मन्दिर में भजन, कीर्तन एवं षादी के अवसर पर स्त्रियों द्वारा किया जाता है। लोक नाटकों (सांग) में भी इस वाद्य का प्रयोग किया जाता है।

ढोल– हरियाणा के प्राचीन वाद्यों में ढोल वाद्य काफी प्रचलित है यह ढोलकी वाद्य का बड़ा रूप है ढोल वाद्य का वादन पशु मेले, नीलामी, कुश्ती, खेल, तमाशे, विवाह, जन्म, मुंडन संस्कार, बसंत पंचमी विभिन्न अवसरों पर किया जाता है। (1) ढोल वाद्य को प्रसन्नता का प्रतीक माना गया है। नगाड़ा – लोक संगीत में प्रयुक्त होने वाला वाद्य नगाड़ा भी अति प्राचीन वाद्य है। नगाड़े वाद्य का प्रचलन सांग तथा रागणियों के साथ होता है। इस

वाद्य का प्रयोग हरियाणा के युवा महोत्सव में हरियाणवी वाद्यवृन्द में मुख्य रूप से होता है। इस वाद्य का प्रयोग प्राचीन समय में राजा महाराजों की उद्घोशणओं के समय व युद्ध के समय किया जाता था। (2) डेरू – डेरू लोक वाद्य का प्रयोग पारम्परिक गूगा भक्त (गाथा) गायन के साथ होता है। इसके अतिरिक्त इस वाद्य का प्रयोग हरियाणवी वाद्यवृन्द में तथा एकल वाद्य के रूप में भी होता है। डेरू वादक बांस की लचकदार खपचियों से डेरू बजाता है और बीच–बीच में ताल के अनुरूप डोरियों को दबा–दबा कर ध्वनि एवं स्वर को ऊंचा नीचा करता है। (3) सारंगी – हरियाणा के लोक संगीत में इस वाद्य का प्रयोग रागिनि, किस्सा राग, गूगा गायन में होता है। अलगोजा – अलगोजा प्राचीन वाद्य है इसका प्रयोग लोकसंगीत में लोकगायन, लोकनृत्य के साथ संगत के रूप में एवं स्वतंत्र रूप से होता है। शहनाई– हरियाणा में शहनाई वाद्य का प्रयोग विवाह के अवसर पर किया जाता है। शंख – शंख वाद्य का प्रयोग मन्दिर की आरती के साथ होता है। बीन– बीन प्राचीन वाद्य है यह सपेरों का वाद्य है इसका प्रयोग लोक नृत्यों तथा सांग के साथ होता है। ताषा – ताषा वाद्य का प्रयोग हरियाणा में जलसों, जलूसों, बाजीगर के तमाषों, विवाह के अवसर पर होता है। इसका प्रयोग युवा महोत्सव पर हरियाणवी वाद्यवृन्द में भी किया जाता है।